एपिसोड - 4

पात्र

पृथ्वी : महिला
टीचर : वयस्क महिला
रवि : छात्र , लड़का
पापा : रवि के पिता
रानी : लड़की . रवि की सहपाठी
कमला : वयस्क महिला
हरि : लड़का
ज़िप सुधारने वाला : वयस्क पुरुष
रामू : हरि के पिता
शर्मा जी : वयस्क पुरुष

पृथ्वी :- मैं धरती हूँ - धरती माता !! क्रम के अनुसार मैं सौर मण्डल में सूर्य से तीसरे स्थान पर हूँ ! अपार जल राशि और महकती हवाओं से भरपूर - हरियाली की चादर ओढ़े , अनमोल खनिज भंडार की स्वामिनी मैं , वो एकमात्र ग्रह हूँ जहां जीवन धड़कता है - अबतक खोजे गए किसी भी ग्रह पर,दूर दूर तक जीवन के कोई निशान नहीं मिल सके हैं !
मैं अदभुत हूँ – मैं विलक्षण हूँ !!
जीवन के लिए ज़रूरी हरेक वस्तु , हर पदार्थ का एकमात्र स्रोत मैं ही हूँ ! साँस देने वाली प्राण वायु मुझी में प्रवाहित होती है - समस्त प्राणी जगत की प्यास बुझाने वाला , खेतों को सिंचित करने वाला जल भंडार मुझी में लहराता है ! करोड़ों वर्षों से खनिज सम्पदा की अनमोल धरोहर मैं ही सँजोती,सहेजती आ रही हूँ ! मैं ही सबका पोषण करती हूँ - चाहे तन को ढंकने वाले वस्त्र हों या उसे सजाने वाले आभूषण,चाहे रोज़मर्रा के काम आनेवाले छोटे बड़े औज़ार हों या भारी भरकम मशीनें - ये सभी वो सौगातें हैं जो संसाधनों के रूप में सदा सदा से दुनिया को मेरे ज़रिये मिलतीं रहीं हैं -अब तक ये सौगातें मैं अपनी मर्ज़ी , ख़ुशी ख़ुशी लुटाती रही लेकिन पिछले कुछ दशकों में परिस्थितियां चिंताजनक रूप से बदलने लगीं हैं - इन सौगातों की मांग लगातार तेज़ी से बढ़ी है -और बढ़ते बढ़ते इस हद तक जा पहुंची कि जिसे पूरा कर पाना अब मेरे बस से बाहर हो चला है ! और मेरी इस बेबसी की ज़िम्मेदार कोई और नहीं बल्कि मेरी अपनी संतान-समस्त मानव जाति है !
हाँ लेकिन ये एक अत्यंत चतुर प्रजाति है - जो समय रहते बड़ी हद तक सचेत हो चली है- जो समझ चुकी है कि निरंतर दोहन किये जा रहे जिन संसाधनों की भरपाई कर पाना खुद मेरे लिए सम्भव नहीं , उनका अंधाधुंध उपभोग आख़िरकार सभी के लिए भयानक संकट साबित होगा ! इस महान ग्रह की सारी आशाएं ऐसे ही सचेत और जागरूक लोगों पर टिकी हैं !

संगीत

टीचर :- बच्चों ! इससे पहले कि छुट्टियां शुरू हों , मैं तुम्हे एक काम सौंप रही हूँ ! मैं चाहती हूँ कि छुट्टियों के इन दो हफ़्तों में तुम लोग जो भी चीज़ें बाहर फेंको , उसका पूरा ब्यौरा लिखकर रक्खो !

रवि :- बाहर फेंको ? मतलब ? - कौन सी चीज़ें ??

टीचर :- मेरा मतलब है - हर वो चीज़ जिसे तुम रद्दी समझ कर फेंक देते हो - जैसे कि - यूज़ एंड थ्रो पेन्स , पिकनिक में डिस्पोज़ेबल प्लेट्स और कटलरी , गिफ्ट में नया स्मार्ट फोन मिलने पर तुम्हारा मोबाइल !! समझ गए ना ? तो यही हिसाब तुम्हे रखना है - ओ के !!

रवि :- लेकिन ये आप क्यों कराना चाहतीं हैं हमसे ?

टीचर :- ये एक एक्सपेरिमेंट है ! हाल ही में WWF इंटरनेशनल के डायरेक्टर जनरल जिम लीप की कही बात मैंने पढी ! वो कहते हैं - हम लोग तो धरती पर कुछ इस तरह से रह रहे हैं मानो हमने अपने लिए अलग से कोई दूसरा ग्रह भी तैयार कर रक्खा हो !! हम 50 % से ज़्यादा उन संसाधनों का इस्तेमाल कर रहे हैं जिन्हें धरती सन्तुलित मात्रा में ही मुहैया करा सकती है , और अगर हमने अपना ये रवैया नहीं बदला तो ये प्रतिशत बहुत तेज़ी से बढ़ता चला जायेगा , और, यहां तक कि सन 2030 तक दो दो प्लेनेट भी हमारे लिए काफी नहीं होंगे !

रवि :- ओह ! ये तो वाक़ई बहुत भयानक बात है ! ठीक है - इस्तेमाल करके फेंकने वाली अपनी हर चीज़ का ब्यौरा हम ज़रूर रक्खेंगे !

(क्लास खत्म होने की हलचल - घंटी बजती है - बच्चे मेजें थपथपाते हुए गुड बाई कहते हैं)

संगीत

रवि का घर

पापा :- हाँ तो रवि -छुट्टियां शुरू !! ऍह !!!(पाउच फटने की आवाज़ -मज़े से गुटखा चबाने की आवाज़ निकालते हुए - गुटखा भरे मुंह से बोल रहे हैं) --उम्मीद है , टीचर ने तुम्हे बिज़ी रखने के लिए कुछ होम वर्क दिया होगा -वरना तो पागल कर डालोगे हमें !!!

रवि :- ओहो ...पापा ! दिन भर में कितने गुटखा सैशे ख़तम कर डालते हैं आप ? वो देखिये - कचरे का डब्बा खाली पुड़ियों से लबालब भरता जा रहा है !

माँ :- लो जी - मेरे बेग की ज़िप टूट गई ! नया बेग ही खरीदना पड़ेगा ! रवि की छुट्टियां हैं , तो अपने गांव ही हो आएँगे !-- रवि !!(तेज़ आवाज़ में) - रवि !!! अरे कचरे के डब्बे में क्या ढूंढ रहा है तू ?

रवि :- जो जो भी चीज़ें हमलोग फेंकते हैं , मुझे उन सबका हिसाब रखना है ! ये देखिये 16 गुटखे के पाउच - कल ऑन लाइन डिलिवरी में आये तीन गत्ते के डब्बे - बबल रेप का टुकड़ा- दो कांच की ख़ाली शीशियां , और दो प्लास्टिक के बाल पॉइंट पेन !!

पापा :- फेंकी हुई चीज़ों से खेलना बन्द करो ! आओ चलो , माल का एक चक्कर लगा आते हैं ! ऐसा करते हैं ,छोटी कार से चलते हैं , शहर के भारी ट्रेफिक में वही ठीक रहेगी !

माँ :- रवि ! ए.सी .मत बन्द करना - लौटकर आएँगे तो कमरा ठंडा मिलेगा !

रवि (दबी ज़ुबान से) :

लेकिन टीचर ने तो कहा था - इस्तेमाल नहीं होने की दशा में , बिजली से चलने वाली चीज़ें बन्द रखनीं चाहिएं !!

(सड़क पर चलती कार की आवाज़)

माँ :- कार का ए.सी चलाओ जी - बहुत तेज़ गर्मी है !

(स्विच ओन होने की आवाज़)

माँ (सन्तुष्ट होकर) :- आह !!

पापा :- ओह ! आखिर पहुँच ही गए ! जो फासला 5 मिनिट में पैदल तय हो जाता - उसमें आधा घंटा लग गया ! उफ़ , ये जानलेवा ट्रेफिक !! और किस क़दर ज़्यादा कारें !! दस बरस पहले तक सड़कों पर इतनी ढेर कारें नहीं हुआ करतीं थीं ! समझ में नहीं आता, लोग आखिर शहरों में बड़ी बड़ी गाड़ियां लेकर क्यों घूमते हैं ? अब देखो , हम जब हाई वे पर लांग ड्राइव के लिए जाते हैं तो SUV ले जाते हैं - लेकिन यहां तो हम छोटी कार में ही आए हैं !

रवि :- हमारी टीचर बतातीं हैं , बड़ी कारें ईंधन (फ्यूल) पीतीं हैं !और इनका रख-रखाव भी बहुत भारी होता है ! जो पार्टस टूट जाएँ तो उन्हें मरम्मत करके सुधारने की बजाए बदलना ही पड़ता है ! इस तरह ज़्यादा से ज़्यादा
पार्टस का निर्माण , और जिसका सीधा सीधा अर्थ है खदानों से बहुत बड़ी मात्रा में धातुएं निकालना ! और ढेरों प्लास्टिक का उत्पादन ! वो कहतीं हैं , इनकी वजह से हमारे सीमित प्राकृतिक संसाधनों पर भारी दबाव पड़ता है

माँ (व्यंगात्मक लहजे में) :-

और क्या क्या कहतीं हैं वो ?

रवि (माँ के व्यंग को ना समझते हुए - उत्साह के साथ) :-

वो कहतीं हैं - ये सब कुछ एक सोची समझी नीति के तहत होता है जिसमें सुनिश्चित किया जाता है कि पुर्ज़े , पार्टस और दीगर सामान ज़ल्द से ज़ल्द इस्तेमाल के अयोग्य और चलन से बाहर होते चले जाएं ताकि उन्हें बदलना एक मजबूरी बन जाए !
मैनुफैक्चरर्स लगातार डिज़ाइन्स बदलते रहते हैं ,स्पेयर पार्टस का उत्पादन बन्द हो जाता है और ऐसे मटीरियल का इस्तेमाल किया जाता है जो अधिक टिकाऊ ना हो ! ज़ल्द से ज़ल्द टूटे और बेकार हो जाये ! वो इसे योजनाबद्ध विलोपन –PLANNED OBSOLESCENCE - कहतीं हैं जो लोगों को ज़्यादा से ज़्यादा माल खरीदने पर मजबूर क़र देता है !

पापा :- बस करो रवि ! मैं अफ़्फोर्ड कर सकता हूँ !-- हूँउउउ !!! आ गया हूँ तो क्यूँ ना जैकेट से मैच करता वालेट ही खरीद लूँ ! और अपने वाच कलेक्शन के लिए अच्छा सा लेदर ऑर्गनाइज़र भी !!

माँ :- कितनी भीड़ है यहां ...! देखो - हर जगह लोग ही लोग नज़र आ रहे हैं !

रवि(दबी आवाज़ में):- मैंने पढ़ा है - 2011 में 623 मिलियन (6230 लाख) पुरुष और 586 मिलियन(5860 लाख) महिला आबादी थी अपने देश की .! अब 2017 है - तो संख्या बढ़ गई .!

माँ (चिढ कर) :- तो ? तुम्हारा मतलब है वो सारी आबादी आज -इसी माल में जमा हो गई है ? चलो , इधर, इस काउंटर पर आओ.(अचानक किसी परिचित को देखते ही).हेल्लो दिव्या जी ! ओहो , बिटिया भी साथ हैं ! अच्छा अच्छा - तीन मैचिंग पर्स खरीदे हैं आपने अपनी नयी आउट फिट के लिए ! रवि ...!! जाओ - रानी से गपशप करो !! - अरे , कम से कम हमें तो परेशान नहीं करोगे तुम दोनों !! सही हैं ना मिसेज़ शर्मा ?.. जाओ , उधर फ़ूड कोर्ट में कुछ खाओ पियो !..फिर साथ ले लेंगे तुम्हे !!

संगीत

(रवि / रानी फ़ूड कोर्ट में)

रवि :- क्या खाना चाहोगी ?

रानी :- कोल्ड ड्रिंक्स ले लेते हैं - साथ में कुछ यूँही , चबाने को !! भूख मुझे बिलकुल नहीं है लेकिन कुछ तो आर्डर करना ही पड़ेगा !!

(केश रजिस्टर ड्राअर खोलने , माइक्रोवेव , खाना गर्म करने और टेबल पर प्लेट्स रखने की आवाज़ें)

रवि :- क्या फेंकी गयी चीज़ों की लिस्ट बनाना शुरू कर दिया तुमने ? मेरी लिस्ट तो खासी लम्बी हो चुकी है ! कितनी कितनी चीज़ें हर रोज़ फेंक दिया करते हैं हम, इस पर मैंने पहले कभी ग़ौर ही नहीं किया था !

रानी (दुखी होकर) :- दीदी और मम्मी जो सामान आज खरीदेंगी उसकी फिंकने वाली पेकिंग भी तो जोड़नी होगी अपनी लिस्ट में मुझे ! पहले ही काफी सामान भरा है कार में ! पता है ,मम्मी एक वाशिंग पावडर खरीदेंगी जो एक प्लास्टिक पाउच में पैक होगा- और वो पाउच होगा बड़े से गत्ते के डब्बे में !! डब्बा तो मम्मी काउंटर पर ही फ़ेंक देंगी ! बताओ ! किस क़दर वेस्टेज !! काग़ज़ बनाने के लिए कितने सारे पेड़ काटे जाते हैं !

रवि :- और ये थर्माकोल के कप्स और प्लेटें ! पेपर नेपकिन्स और प्लास्टिक कटलरी !! एक बार इस्तेमाल होने के बाद ये सब कूड़े में ही तो जाएंगी !

रानी :- और क्या .. और ये मिटने वाली भी नहीं हैं !

रवि :- मालूम ! कुछ दिन पहले मैं कोलकोता गया था ! हम लोग एयरपोर्ट से साल्ट लेक जा रहे थे ! रास्ते में मैंने पहाड़ियां सरीखी देखीं जिन पर चीलें मंडरा रहीं थीं !

रानी(हैरत से) :- पहाड़ियां ?.. कोलकोता में ??

रवि (दुखी स्वर में) :- हाँ ! मैंने पूछा तो ड्राइवर अंकल ने बताया -1980 से कूड़े का अंबार वहां लाकर गड्ढों में भरा जाने लगा ! शहर का सारा कूड़ा वहीं दफना दिया जाता

था ! और अब दफनाने लायक़ जगह ही नहीं बची - तो कूड़े का ढेर पहाड़ी की तरह ऊंचा होता चला जा रहा है !

रानी :- यही हाल दिल्ली के ग़ाज़ीपुर का है .. मेरे ख्याल से सभी मेट्रो सिटीज़ में कूड़ा गड्ढों में भरा जाता होगा ..वरना छुटकारा कैसे पाएं इतने कूड़े करकट से ..शहरों में लोग भी तो कितने सारे रहते है ! हम लोग जीरो वेस्ट नहीं हो सकते ! हो सकते हैं क्या ?

रवि :- कहते हैं ,बेहद अमीर देशों ने ही यूज़ एंड थ्रो जैसी सोच को हवा दी जिस वजह से ढेरों चीज़ें रद्दी कहकर फ़ेंक दी जातीं हैं और कूड़ा बेहद भारी पैमाने पर तैयार होने लगा है !

रानी :- यक़ीनन सभी अमीर देशों में ये चलन नहीं होगा ! वहां के लोग शिक्षित और जागरूक होते होंगे !खास कर यूरोप के कई बड़े अमीर देशों ने पर्यावरण पोषक और हरित जीवन शैली अपनाई है - हमारी पारंपरिक भारतीय शैली की तरह !

रवि :- मैंने पढ़ा है कि स्वीडन ज़ीरो वेस्ट है ! खैर चलो अगर हम ज़ीरो वेस्ट ना भी बन सकें तो कम से कम ऐसा कुछ तो करें कि कचरा ज़्यादा ना बढ़े ! और जितना भी कचरा हो , उसे बेहतर ढंग से ठिकाने लगाने की व्यवस्था की जाये ! आखिर हम क्यों थर्माकोल प्लेट्स और प्लास्टिक कटलरी का इस्तेमाल करते रहें ? क्या हम दौनों और पत्तलों का इस्तेमाल नहीं कर सकते जो फेंक देने पर धरती माता को कष्ट देने की बजाए अपने आप ही नष्ट हो जाते हैं ?

****

पृथ्वी :- मैंने और आपने एक प्रवत्ति (फितरत / रुझान) को समझने के लिए रवि और रानी के परिवारों की काफी बातें सुनीं ! यह खतरनाक प्रवत्ति है ! मेरी नज़र में यह ठेठ उपभोक्तावादी सोच है ऐसी सोच रखने वाले हर चीज़ का ज़्यादा से ज़्यादा इस्तेमाल करते हैं ! वो नहीं समझते कि सभी साज़ सामान , उपकरण और मशीनें मुझ से निकाले गए संसाधनों से ही तैयार होते हैं ! बेशक मेरे पास संसाधनों का विशाल भंडार है जो विपुल अवश्य है किन्तु अक्षय नहीं - निरन्तर दोहन किया जाने पर एक दिन उसकी समाप्ति भी निश्चित है ! मेरे कुछ संसाधन तो ऐसे हैं जिनकी तत्काल भरपाई सम्भव नहीं -जो एक बार खत्म हो गए तो हो गए ! मिसाल के लिए , भू गर्भ तेल भंडार वो संसाधन है जिसका नवीनीकरण नहीं हो सकता ! कोयला, क्रूड आयल और नेचुरल गैस, ये सभी जीवाश्म ईंधन (फॉसिल फ्यूल) कहे जाते हैं क्यों कि इनका निर्माण करोड़ों वर्ष पहले यहां मौजूद रहे जीव जन्तुओं और वनस्पतियों के गड़े अवशेषों से हो सका था ! क्या एक बार पूरी तरह दोहन करके, खत्म कर देने के बाद इन्हें फिर किसी नए रास्ते से हासिल किया जा सकता है ?

एक सदी पहले तक इंसान टूटी हुई चीज़ों की मरम्मत करके या कोई और तरीक़ा खोज कर अपनी समस्या सुलझा लिया करता था ! फिर अमीर मुल्क़ों ने ऐसी चीज़ें फ़ेंकना और बिना एक बार भी सोचे उनकी जगह नयी चीज़ें खरीदना शुरू कर दिया ! नतीजा ये कि चीज़ों की मांग बढ़ी और ज़्यादा से ज़्यादा उत्पादन होने लगा , जिसकी वजह से कच्चे माल की मांग में इज़ाफ़ा हुआ ! और इसका सीधा मतलब था - मेरे संसाधनों का भरपूर दोहन !!

एक देश है जिसका नाम है - हिन्दोस्तान , जहाँ कभी मेरे संसाधनों का बहुत ध्यान रखा जाता था ! कबाड़ी लोग घूम घूमकर लोगों से टूटी पुरानी चीज़ें खरीदते ! बाद में गला कर या पिघला कर इनका फिर

से इस्तेमाल कर लिया जाता ! दूकानदार पुरानी कापियों के पन्नों से बनी थैलियों में सौदा रख कर देते थे ! वे प्लास्टिक का इस्तेमाल नहीं करते थे ! खाली डब्बों और पीपों का इस्तेमाल दूसरा सामान रखने में होता था ! पुरानी साड़ियां बच्चों की नर्म रज़ाई और कपड़ों के तौर पर काम आ जातीं थीं ! परम्परागत रूप से हिन्दोस्तान में बहुत कम ही चीज़ें रद्दी समझ कर अलग की जाती या कूड़े में फेंकी जाती !

रवि और रानी के माता - पिता भी हिन्दोस्तान में ही रहते हैं लेकिन उन्होंने जीने का एक नया तरीक़ा अपना लिया है जो किन्ही अमीर मुल्क़ों की उजाड़ू फितरत से होड़ लगाना चाहता है !
फिर भी आशा पूरी तरह मिटी नहीं है ! लगता है , नयी पीढी मेरी पीड़ा से परिचित है ! ज़रा देखूं , हिन्दोस्तान में और कहाँ क्या हो रहा है !

संगीत

(चिड़ियों की चहक - गायों का रम्भाना - साइकल की घण्टी !! दूर से आती आवाज़ - चेन सुधरवालो , चेन !!)

कमला :- ओ हरिया ! बेटा दौड़के उस चेन वाले को तो रोक ! नयी चेन लगवानी है तेरी पेंट में ! ठीक हो गयी तो एकदम नयी दिखने लगेगी वो !!

हरी(आशा के साथ):- मैंने मोतीचाचा की दूकान में बढ़िया जीन्स देखी है.! दिलाओगी माँ ?

कमला :- दिला तो सकती हूँ , लेकिन दिलाऊंगी नहीं ! अरे !! खासी नयी हैं. तेरी पेंटें -बहुत दिन चलेंगी ! अब जा ,चेन वाले को रोक ! मेरी छतरी दे ज़रा , खेत जाना है तेरे बापू को खाना देने !

हरी :- अब तो नयी छतरी लेलो माँ ! देखो इसकी एक डंडी बाहर निकल आयी !

कमला :- उसकी फिकर छोड़ ! लपक कर रोक , नहीं चला जायेगा वो !

(हरी चेनवाले को साथ लेकर आता है ! साइकल क़रीब आकर रुकती है)

चेनवाला :- अरे ! ये तो बढ़िया पतलून है - नयी ज़िप लगा दूंगा तो फ्रस्टकिलास हो जाएगी ! और हाँ - छतरियां भी सुधारता हूँ ! एक तान बदली नहीं कि तुम्हारी छतरी एकदम नयी की माफिक हो जाएगी !... लो जी , हो गया !! चेन के पांच रुपए , और तान के - दस रुपए !!

कमला :- ठीक है भैया ! ये लो पन्द्रह रुपये !!.. अच्छा हरी ! मैं खेत जा रही हूँ ! अपनी बहन का ख्याल रखना !
कपड़े बदलने पडें तो मुलायम कपड़ों के टुकड़े रक्खे हैं - कल ही अपनी फटी साड़ी से बनाये हैं मैंने ! उसके पास बैठ कर अपना होमवर्क करना ! आकर चेक करूँगी !

(इसी बीच खेत में हरी का पिता , रामू ब्लॉक डेवलपमेंट ऑफिसर शर्मा जी से बात कर रहा है ! दूर से कौओं की आवाज़ें आ रहीं हैं ! एक मोटर सायकल गुज़रती है ! खेतों में पम्प से हो रही सिंचाई की आवाज़ सुनाई दे रही है)

रामू :- शर्मा जी ! कल पंचायत प्रधान हमें कुदरती संसाधनों के घटते जाने के बारे में बता रहे थे ! कुछ ठीक से समझ नहीं पाया मैं ! खुद अपने कुँए के पानी का लेवल घटते जाने से इतना परेशान रहता हूँ कि अच्छी तरह सुन ही नहीं सका !

शर्मा जी :- दरअसल वो यही तो बता रहे थे ! देख तो रहे हो तुम्हारे कितने ही पड़ौसियों ने पंप लगवा रक्खे है - और वो घण्टों चला करते हैं ! सिंचाई के नाम पर बेतहाशा पानी खर्च

हो रहा है ! यानी वो पानी सरीखे एक कुदरती संसाधन को जितनी तेज़ रफ्तार से बहाये जा रहे हैं उतनी तेज़ रफ्तार से तो उसकी भरपाई नहीं हो सकती ना !!

रामू :- लो ! ऐसी हालत में तो पानी का लेबल गिरना ही गिरना है ! पानी मौसम के हिसाब से ज़मीन में धीरे धीरे जमा होता रहता है ! अगर इसकी परवाह किये बिना उसे इसी तरह बेहिसाब खींचा जाता रहा तो क्या एक दिन वो पानी भी जवाब नहीं दे जायेगा ?

शर्मा जी :- सही बात है ! तुम्हे तो पता ही होगा कि दुनिया में सबसे ज़्यादा भूजल का इस्तेमाल हमारे देश में होता है ! क़रीब नव्वे फीसदी भूजल का उपयोग हम सिंचाई में करते हैं !

रामू :- हाँ , ये तो मैं भी देख रहा हूँ कि हर साल मेरे कुंए का पानी लेबल कम होता जा रहा है ! पास की नदी भी सूखती जा रही है ! अब उसे खोदके गहरा किया जा रहा है ! लेकिन - आखिर करें तो क्या करें ? आबादी है कि बढ़ती ही चली जा रही है - तो ऐसे में पानी भी ज्यादा चाहिए - ज़मीन भी ज़्यादा चाहिए ! संसाधनों का भी ज़्यादा से ज़्यादा इस्तेमाल होगा !

शर्माजी :- भई, बेतहाशा बढ़ती आबादी तो विकट समस्या है ही ! एक अनुमान के मुताबिक़ दुनिया कि आबादी 7 अरब का आंकड़ा पार कर चुकी है जबकि 200 बरस पहले तक ये एक अरब से भी कम थी ! सन 2045 तक ये आबादी बढ़ते बढ़ते 9 अरब हो जाने का अंदेशा है ! लोगों की आयु सीमा में भी इज़ाफ़ा हुआ है ! अब जिस हिसाब से आबादी बढ़ेगी , उसी हिसाब से अनाज की भी ज़रूरत पड़ेगी !

रामू :- ज़रूरत तो पड़ेगी ही ! अरे साब जब परिवार बढ़ते है -तो आबादी बढ़ती ही बढ़ती है ! अनाज की पैदावार भी बढ़ाई जाती है !

शर्माजी(हंसते हुए) :- काश ये बात इतनी आसान होती ! दरअसल आबादी बढ़ने की समस्या का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है ! थौमस रॉबर्ट माल्थस वो पहले अर्थ शास्त्री थे जिन्होंने जनसँख्या के बारे में एक सिद्धांत सामने रखा !

रामू :- अच्छा !! बताइये , वो क्या था !

शर्माजी :- आसान शब्दों में कहें तो माल्थस के मुताबिक़ अन्न की पूर्ती के मुक़ाबले आबादी की दर कहीं ज़्यादा तेज़ी से बढ़ती है ! आखिकार इस व्रद्धि को अकाल,महामारियां और युद्ध नियंत्रित करते हैं ! इसे माल्थूसियन संकट के नाम से जाना जाता है !

रामू :- ओ हो - याने लोग मरेंगे तभी जाके हिसाब सही बैठेगा !

शर्माजी :- सिर्फ यही एक वजह नहीं है ! कई और भी कारण हैं ! जैसे कई विद्वानों का विचार था कि 1970 और 1980 में करोड़ों लोग भुखमरी का शिकार होकर मारे जायेंगे !

रामू (बात काटते हुए) :-
ऐसा तो कुछ भी नहीं हुआ !

शर्माजी :- हाँ , क्यों कि वो लोग टेक्नोलॉजी के ज़बरदस्त असर और खेती के स्तर पर की गयी सही मोरचाबंदी का पहले से अनुमान नहीं लगा सके थे !

रामू(प्रसन्नता से):- हाँ , हाँ ! हमारे पास बीज भी उन्नत क़िस्म के थे ! खाद और कीटनाशकों से भी फसल में बढोत्तरी हुई ! ट्रांसपोर्ट और अन्न सुरक्षा की बेहतर सुविधाओं की वजह से अपने उन्ही सीमित साधनों के बावजूद हम अधिक उपज हासिल कर सके !

शर्माजी :- सिर्फ इतना ही नहीं , स्वास्थ्य के क्षेत्र में हुई तरक़्क़ी से म्रत्यु दर में भी काफी कमी आई ! कई लोग उन बीमारियों से बचने में सफल रहे जिनसे बच पाना पहले मुमकिन नहीं था ! लोगों की आयु में इज़ाफ़ा हुआ ! और अब तो तकनीकी तरक़्क़ी भी बुलन्दी पर है फिर भी

रोटी , कपड़ा और मकान की मांग है कि बढ़ती ही जा रही है ! आबादी का विस्फोट बदस्तूर जारी है !

रामू :- ओ हो ! कमला मेरा खाना लेकर आ रही है ! पिछले महीने मैं और कमला शहर गए थे ! सड़क के दोनों तरफ सूखी और उजाड़ ज़मीन देखकर बड़ा दुःख हुआ ! कई जगहों पर कूड़ा ला लाकर भरा जा रहा था ! शहर तक आते आते ज़मीन पर हर तरफ गन्दगी और कचरे के बड़े बड़े अम्बार नज़र आये ! देखकर अच्छा नहीं लगा ! अरे अगर ज़मीन की इसी तरह बेक़द्री होती रही तो ज़रूरत मुताबिक़ अन्न कैसे पैदा होगा ?

शर्माजी :- बरसों पहले , सन 1965 में एक किताब सामने आई थी जिसमें पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाली बातों को उजागर करते हुए बड़ी स्पष्ट चेतावनी दी गई थी ! इस मसले पर लिखी गयी ये पहली किताब थी ! पर लगता है , हमने उससे कुछ सीख नहीं ली !

रामू (हैरत से):- क्या ? 1962 में ? आधी सदी पहले ? - किसने लिक्खी थी वो किताब ?

शर्माजी :- वो एक अमरीकी महिला थीं ! उनका नाम था - रेचेल कार्सन ! वो समुद्री जीव वैज्ञानिक होने के साथ ही जीव संरक्षण के काम से भी जुडी हुईं थीं ! उनकी इस किताब का नाम साइलेंट स्प्रिंग था ! सन 2006 में ये किताब दुनिया की 25 महान विज्ञानं पुस्तकों में शामिल की गई ! लेकिन क्या वाक़ई हमने उनके सन्देश को ग्रहण किया ?

(कमला आती है ! सांस थोड़ी भारी है - डलिया नीचे रखते हुए उसकी चूड़ियों की खनक सुनायी देती है)

कमला (थोड़ा हाँफते हुए):- नमस्ते शर्माजी ! - क्या बातें हो रहीं हैं ?

शर्माजी :- नमस्ते कमला भाभी ! हम ज़मीन की बर्बादी के बारे में बात कर रहे थे !

कमला :- अकेली उसीकी बर्बादी क्या - पेड़ों को किस बेदर्दी से काटा जा रहा है !! जल्द ही जंगलों का सफाया हो जाएगा ! बारिश अच्छी उपजाऊ मिट्टी बहा ले जाएगी ! मेरा बेटा बताता है - हर साल अंदाज़न 180 लाख एकड़ जंगल उजाड़ दिए जाते हैं ! उसीने बताया कि दुनिया के आधे जंगल काटे जा चुके हैं !

शर्माजी (दुखी लहजे में):- हाँ ! और इसको नाम दिया जा रहा है विकास का !:

कमला :- एक बात मैं बताती हूँ ! मेरे मायके से लगे गाँव में खदानें थीं ! वहां के निकला माल विकास में ही काम आता था ! अब क्या हुआ कि खदानों का सारा माल निचोड़ तो निचोड़ लिया - फिर खाली खदानों को वैसा ही छोड़ दिया ! उस ज़मीन को फिर से उपजाऊ बनाने की कोई कोशिश नहीं की गई !

रामू :- पर्यावरण में फैलता प्रदूषण आसपास के खेतों को भी बुरी तरह प्रभावित करने लगा है ! देसी पौधे सूख रहे हैं ! फसल वाले पौधों में केमिकल्स की मात्रा इस क़दर ज्यादा बढ़ी होती है कि वो वो अनाज खाने लायक़ नहीं रहता ! अब सुना है यहां मनोरंजन पार्क बनेगा- जिसके लिए खेती वाली ज़मीन को खोदा जा रहा है !

शर्माजी (आह भरकर) :- हाँ भई ! शहरीकरण लाखों हेक्टर खेती योग्य बढ़िया ज़मीन हर साल निगल जाता है ! अन्न पैदा करने के लिए ज़मीन ज़रूरी है लेकिन उसकी मात्रा सीमित है ! हमारे देश में जोतने-बोने योग्य ज़मीन कम होती जा रही है ! इसका सीधा असर अनाज के उत्पादन पर पड़ रहा है ! ये कोई सन्तुलित या टिकाऊ तरीक़ा नहीं है ! साथ ही शहरों को भी लगातार बढ़ती आबादी का दबाव झेलना पड़ता है ! अनुमान है कि 2050 तक हर तीन में से दो लोग किसी न किसी शहर में जा बसेंगे !

रामू :- हाँ ! शहरों की हवा अब गांव गांव पहुंचने लगीं हैं ! वैसे भी बच्चे हमारे सादी सरल ज़िन्दगी से सन्तुष्ट नज़र नहीं आते ! उन्हें टी.वी,पर दिखाई जानेवाली कई चीज़ें चाहियें ! उनके लिए बड़े बड़े पैकेट लाना तो मेरे बस की बात है नहीं , इसलिए शेम्पू की छोटी छोटी पुड़ियें खरीद लाता हूँ ! आलूचिप्स ,नमकीन .!!. ये पुड़ियें बाहर से देखने में तो बड़ी उम्दा लगतीं हैं लेकिन इनमें से असल माल बहुत ही कम निकलता है (खिसियाई हंसी हंस कर रह जाता है) खाली पन्नी वग़ैरा हम फ़ेंक देते हैं ! वैसे भी उन पैकटों में खाने लायक़ चीज़ कम और प्लास्टिक ही ज़्यादा होता है ! हम इनसे पीछा नहीं छुड़ा सकते ! इन्हें गाड़ने से भी कोई फायदा नहीं - खाद तो बनने से रहा ! जलाना तो और भी बुरा है ! ढेरों खाली पन्नी पैकट गांव भर में इधर उधर उड़ते फिरते हैं !

कमला :- कल ही मेरे बेटे बेटे ने पूछा - माँ , मुन्नी के लिए डिस्पोज़ल वाले जांघिये क्यों नहीं खरीद लिये ?(हंसती है) बच्चे जो कुछ भी देखते सुनते हैं , उसीके हिसाब से अपनी सोच बनाने लगते हैं ! अमीरों सरीखा रहन सहन अपनाना चाहते हैं ! लेकिन इस फ़िज़ूलखर्ची के आगे चलकर क्या नतीजे निकलेंगे , इसे नहीं समझते ! बेटा कहता है , हमारे पास सायकल नहीं - मोटर सायकल होनी चाहिए ! अरे, वो तो कार के सपने देखता है , कार के !!

शर्माजी (हंसते हुए) :-

कार के सपने तो कितने ही लोग देखते हैं ! एक दिन उसका सपना भी ज़रूर सच हो जायेगा ! 2030 तक दुनिया में कारों की संख्या दोगुनी होजाने का अनुमान है ! आम तौर पर वैसे भी हमारे शहरी परिवारों में एक से ज़्यादा कारें होतीं हैं ! आगे चलकर हमें और ज़्यादा चौड़ी सड़कों और कहीं ज़्यादा ईंधन की ज़रूरत पड़ेगी !

कमला :- यही तो मुश्किल है ! कहाँ से लाएंगे इतना पेट्रोल ? पता है केरोसीन कितना मेंहगा हो गया है ! दूकान पर लाइन लगानी पड़ती है ! ज़रूरत तो किसी की भी पूरी नहीं होती ! मेरी ननद बता रही थी - एल पी जी सिलेंडर भी महंगे हो गए हैं ! हर चीज़ का अभाव है ! मेरी माँ को तो ऐसी दिक़्क़तों से ज़्यादा नहीं जूझना पड़ा ...लेकिन अगर मैंने ख्याल ना रक्खा और किफ़ायत से काम नहीं लिया तो - अभाव की समस्या का सामना एक दिन मेरे बच्चों को ज़रूर करना पड़ेगा !

शर्माजी :- अगले 25 वर्षों तक तो पेट्रोल ही दुनिया में ऊर्जा का सबसे बड़ा साधन बना रहेगा ! लेकिन उसकी पूर्तिकम होने और भारत सरीखे देशों में ऊर्जा की तेज़ी से बढ़ती मांग के कारण कच्चे तेल की कीमतें बढ़ती चली जाएंगी ! लेकिन पूर्ती की भी आखिर एक सीमा है ! जिस दिन वो समाप्त हो गई ..(आवाज़ गूंजती जाती है)

रामू :- पेट्रोल तो पेट्रोल -अब तो पानी का भी संकट बढ़ता जा रहा है ! मेरी बहन शहर से लगी झुग्गी बस्ती में रहती है ! वो बताती है - नल के पानी से पूरा नहीं होता इसलिए पानी खरीदना पड़ता है उसे ! मैंने उससे कहा - पहले तो नल के पानी का रिसाव रोको ! फिर बारिश के पानी को जमा करना शुरू करो ! इसके अलावा जिस पानी से चावल और सब्ज़ी-भाजी धोती हो , उसे अपने पेड़ पौधे सींचने के काम में लो !

कमला :- उसीने बताया कि लोग तो बर्तन धोते वक़्त या दांत मांजते समय भी नल खुला रखते हैं ! जिन दौलतमंदों के पास पानी की भरमार है , उन्हें इस तरह पानी बर्बाद करते देख उसे जलन होती है - ग़ुस्सा आता है !

शर्माजी :- मैं उनकी भावना समझ सकता हूँ ! और ये बात सिर्फ इंसानों इंसानों के बीच ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर–विकसित और विकासशील देशों के बीच भी लागू होती है !! लम्बे

समय तक चलने लायक़ प्राकतिक संसाधनों का जितना दोहन करना चाहिए , हम लोग उसका दो से तीन गुना ज़्यादा दोहन किये जा रहे हैं ! हिसाब के मुताबिक़ ऊंची आय स्तर के देश कम आय स्तर वाले देशों के मुक़ाबले प्राकतिक संसाधनों का क़रीब 5 गुना ज़्यादा दोहन कर रहे हैं !

रामू :- जिन जिन संसाधनों का भंडार घटता जायेगा, वो ज़्यादा महंगे होते जायेंगे ! आर्थिक खाई गम्भीर रूप से गहरा जाएगी ! आसानी से ना मिल पाने वाले संसाधनों को धनी वर्ग मुंहमांगे दामों पर खरीद लेगा और ग़रीब वर्ग उनके लिए तरसता रह जायेगा ! धनवान समझते हैं कि उनके पास ज़्यादा पैसा हैं इसलिए वो संसाधनों का ज़्यादा से ज़्यादा भाग खरीद सकते हैं !

शर्माजी :- धनी आबादी अपनी मांग बढ़ाने का ये जो रास्ता अख्तियार करेगी , वो किसी अंधे मोड़ पर जाकर ही खत्म होगा , लेकिन इस हक़ीक़त को कोई समझना नहीं चाहता !
यक़ीनन एक ऐसा दिन ज़रूर आएगा जब मौजूदा संसाधन चुक जायेंगे और उन्हें नए सिरे से खोजना और हासिल कर पाना असम्भव हो जायेगा ! अब बताओ , जब संसाधन ही नहीं बचेंगे तो उन्हें कोई कैसे खरीदेगा ?

रामू :- सही बात है !

शर्माजी :- असल मुद्दा सिर्फ संसाधनों के उपभोग करने भर का नहीं , बल्कि उपभोग करने के तरीक़ों और उनसे होने वाले प्रभावों का है ! उपभोग के क्षेत्र में ज़बरदस्त ग़ैर बराबरी देखी गयी है ! महज़ एक दशक पहले कुल उपभोग का 76.6 % दुनिया की बीस प्रतिशत अमीर आबादी के हिस्से में गया जबकि ग़रीबों को 1.5 पर सब्र करना पड़ा ! आज भी बेहद ग़रीब और कमज़ोर राष्ट्र ही अमीर देशों के भड़कीले और फ़िज़ूल खर्च रहन सहन का बोझा उठा रहे हैं !

कमला :- हमें नुमाइशी और ग़ैर ज़रूरी चीज़ों के पीछे नहीं दौड़ना चाहिए ! दूसरे देशों में होती फ़िज़ूलखर्ची की देखादेखी भी बन्द करना चाहिए ! अच्छा होगा कि हम पीछे मुड़कर देखें और फिर से अपनी सदियों पुरानी , सन्तुलित और टिकाऊ परम्परा को अपनाएं !

रामू :- तुम्हारी बात अपनी जगह ठीक है कमला , लेकिन सच तो यही है कि हम देहातों में रहने वाले शहरी लोगों जैसी ज़िन्दगी का मज़ा लेना चाहते हैं ! शहर वाले हैं कि दौलतमंद विकसित देश वालों जैसी ज़िन्दगी जीना चाहते हैं ! ये एक हमेशा चलने वाला संघर्ष है ! कहें तो तरक़्क़ी की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है - अपने बच्चों को हम बेहतर ज़िन्दगी देना चाहते हैं ! बताओ , गांव में बिजली आने पर क्या तुम्हे खुशी नहीं हुई थी ?

कमला :- बिलकुल हुई थी ! और हरिया को कमरे से बाहर जाते वक़्त पंखा लाइट बन्द करना भी मैंने ही सिखाया है ! यही तो कह रही हूँ मैं कि हमें क़तई फ़िज़ूलखर्ची नहीं करनी चाहिए ! विज्ञानं से ही तो वो तरीके , वो टेक्नोलॉजी मिली है जिसकी मदद से हम धरती माता की अनमोल भेंट, याने प्राकृतिक संसाधनों को हासिल कर सकते हैं ! तो इस सुविधा का दुरूपयोग ना करते हुए हमें अपना सहयोग देना चाहिए !
प्राकृतिक संसाधन कोई मुफ्त का माल नहीं है ! ये संसाधन असीमित भी नहीं हैं ! हमें नहीं भूलना चाहिए कि जो चीज़ हम आज बर्बाद कर रहे हैं , एक दिन उसकी ज़रूरत शिद्दत से पड़ सकती है !

शर्माजी :- आपने बिलकुल सही कहा ! आज अगर उभरते हुए देश भी अमीर देशों सरीखा रास्ता अपना लेंगे तो उनकी उपभोक्ता शैली भी पर्यावरण के लिए उतनी ही घातक सिद्ध होगी ! हमारे देश को आर्थिक उन्नति के लिए संसाधनों की ज़रूरत है ! ये संसाधन घरेलू भी हो

सकते हैं और आयातित याने बाहर से मंगाए हुए भी ! हमें हर हाल में यह सुनिश्चित करना होगा कि उनका सही और बेहतर से बेहतर उपयोग हो ! ना बर्बाद होगी ना मांग की नौबत होगी ! दुनिया भर में हो रही पानी , ऊर्जा और खेतों में डाली जानेवाली खाद और कीटनाशकों के मामले में चल रही बेतरतीबी अब और ज़्यादा बर्दाश्त नहीं की जा सकती !

रामू / कमला :- पर ये होगा किस तरह ?

शर्माजी :- सभी लोगों को समझ लेना चाहिए कि प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग एक दूसरे के साथ गहराई से जुड़ा हम सबका एक साझा मुद्दा है ! लिहाज़ा हमें एक नेक्सस अप्प्रोच रखनी होगी ! एक साझी पद्धति अपनानी होगी ! ये वो पद्धति है जो हर स्तर पर और हर क्षेत्र में प्रबन्धन और प्रशासन को एकसूत्र में पिरोती है ! इसी पद्धति के सहारे हम हरित अर्थ व्यवस्था का लक्ष्य हासिल कर सकेंगे ! ये पद्धति हमे उस हरित अर्थ व्यवस्था की ओर बढ़ने में मदद दे सकती है , जिसका लक्ष्य है संसाधनों का समुचित उपयोग और अधिक से अधिक संयुक्त नीति निर्धारण को प्रोत्साहित करना ताकि हम हरित मार्ग पर आगे बढ़ सकें !

कमला :- एक महवपूर्ण बात तो आपने छोड़ ही दी !

शर्माजी :- वो क्या , भाभीजी ?

कमला :- हमें अपनी पुनः उपयोग और पुनः चक्रण की कई परम्पराओं को बचाना होगा ! अपने बच्चों को सिखाना होगा कि धरती माता हरेक की ज़रूरत तो पूरी कर सकती है लेकिन किसी एक व्यक्ति का भी लालच पूरा नहीं कर सकती - हरगिज़ नहीं ! इन अनमोल संसाधनों की सुरक्षा खुद हमारे अपने हित में है ताकि हमारी भावी पीढी उनका उपयोग कर सके !

शर्माजी :- एकदम सही कहा आपने ! एक बार हमारे नीति निर्माताओं और हमारी भावी पीढी के बीच तालमेल क़ायम हो जाये तो सन्तुलित और टिकाऊ पर्यावरण का सपना ज़रूर हक़ीक़त में बदल कर रहेगा !

****

पृथ्वी :- याद रखो टिकाऊ पर्यावरण मात्र एक शब्द नहीं है ! ये जीवन यापन की उस प्रक्रिया का चयन है जो आने वाले दौर में अस्तित्व और विनाश की नियति निर्धारित करेगा ! और अस्तित्व बना रहने पर भी शेष बच गए थोड़े से संसाधनों की भीषण किल्लत तुम्हे बेपनाह किफायत की ज़िन्दगी जीने पर मजबूर कर देगी !
तो अब तुम्हे कौन सा रास्ता चुनना है , इसका फैसला मैं तुम्ही पर छोड़ती हूँ !

********** x **********